

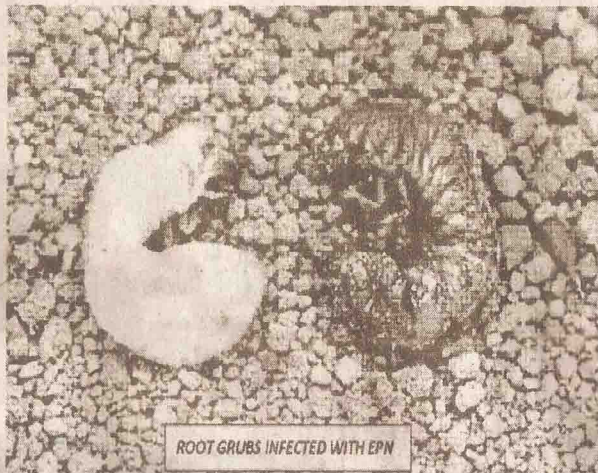
एंटीमोपैथोजेनिक नेमाटोड टेक्नोलॉजी (ईपीएन)-सफेद सूंडी, गोलकृमि एवं

दीमक से मुकाबला करने के लिये आधुनिकतम जैवप्रौद्योगिकी

रायपुर: भारत की अग्रणी कृषि जैव तकनीक कंपनी कैमसन बायोटेक्नोलॉजीज लिमिटेड एंटीमोपैथोजेनिक नेमाटोड टेक्नोलॉजी (ईपीएन) के आधार पर बायोसाइड्स (जैविक कीटनाशकों) की नवीन श्रृंखला पर अपना ध्यान केंद्रित करने की योजना बना रही है। कैमसन की जैविक प्रौद्योगिकी ईपीएन की नवीनतम सफलताओं में से एक "कैल्टर्म सुपर" किसानों को अपनी फसलों को हानिकारक सफेद सूंडी, घातक गोलकृमि एवं दीमकों से निजात दिलाने में सहायता करेगा। यह किफायती, सुरक्षित एवं पर्यावरण-हितैषी है, जिसे भिन्न फसलों एवं भिन्न मृदा स्थितियों में इस्तेमाल किया जा सकता है तथा यह उन किसानों के लिये संकट मोचन बन कर आया है, जो गोलकृमि वर्ग के कीटों से निरंतर परेशान रहते हैं।

ईपीएन सफेद सूंडी, हानिकारक गोलकृमि, दीमक इत्यादि के संहार के लिये नवीनतम जैव नियंत्रक प्रौद्योगिकी है। गोलकृमि दो प्रकार के होते हैं- हानिकारक गोलकृमि जो

फसलों को बर्बाद कर देते हैं और लाभदायक गोलकृमि जो हानिकारक गोलकृमियों को नष्ट कर देते हैं। ईपीएन तकनीक ने लाभदायक गोलकृमियों का



इस्तेमाल करने की कला में महारथ हासिल कर ली है। ये गोलकृमि मृदा से व्युत्पन्न होते हैं, नये हानिकारक मेजबानों (दीमक, सफेद सूंडी और अन्य हानिकारक गोलकृमि) को संक्रमित करते हैं, उनका काम तमाम कर देते हैं तथा बेहतर सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं। श्री संतोष नायर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कैमसन

बायोटेक्नोलॉजीज लि. ने कहा, "भारत के ग्रामीण कृषि समुदायों, सरकारी अभिकरणों एवं नैगामिक घरानों से साझेदारी के साथ कैमसन का उद्देश्य आवश्यकता

आधारित अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से कृषक समुदायों को सशक्तीकृत करना है।

कैमसन का विश्वास है कि कृषि विज्ञान एवं तकनीक में खोजपरकता एक स्वस्थ एवं रोग-मुक्त समाज के सृजन के उसके विजन को महसूस करने का अत्यंत शक्तिशाली माध्यम है। उन्होंने कहा, "भारत का ५५ लाख एकड़ से अधिक कृषि

क्षेत्र हानिकारक गोलकृमियों-रंगहीन गोलकीट जो गन्ना, मूंगफली, सुपारी, मक्का, सब्जियों इत्यादि जैसे विभिन्न फसलों एवं वृक्षारोपण में संक्रमण का कारण बन जाते हैं, से आक्रांत है। चूंकि ये गोलकृमि प्राकृतिक रूप से निर्मित होते हैं, ईपीएन तकनीक किसी भी अवशेष को नहीं छोड़ती एवं मृदा संतुलन में किसी भी प्रकार का बाधा नहीं डालती। यह अन्य परंपरागत प्रणालियों की तुलना में (रासायनिक कीटनाशकों के १२००-१५०० रुपये प्रति एकड़ एवं ५०० किलो नीम केक के १५,००० रुपये प्रति एकड़ की तुलना में ८०० रुपये-१००० रुपये प्रति एकड़ की लागत) किफायती है।

इसका इस्तेमाल अन्य बायोसाइड्स के समान ही किया जाता है (प्रति एकड़ खेत में २ से ५ किग्रा की खुराक, संक्रमण की गंभीरता के आधार पर) और यह २ वर्ष की अवधि की दीर्घकालिक सुरक्षा की पेशकश करती है, जबकि अन्य परंपरागत समकक्ष मात्र ४५ दिन की लघुकालिक सुरक्षा ही उपलब्ध कराते हैं। हालांकि, भारत में कृषि

का पर्यावरण-हितैषी तरीका बहुत सीमित है एवं कैमसन बायोटेक्नोलॉजीज इस क्षेत्र के अग्रदूतों में से एक है। कैमसन सदैव ही ऐसे खोजपरक उत्पादों को पेश करता रहा है, जो पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव डालते हुये कृषिगत उत्पादकता एवं स्थायित्व को बढ़ावा देते हैं। कैमसन उत्पादों की व्यापक श्रृंखला के विपणन हेतु कृषि के परंपरागत ज्ञान में सुरक्षा एवं सुरक्षा के नवीनतम विकास को समीकृत करता है। इनमें संकर बीज, जैव-ऊर्वरक एवं बायोसाइड्स शामिल हैं, जो विष-रहित, पर्यावरण-हितैषी एवं अवशेष-मुक्त होते हैं। कैल्टर्म सुपर ईपीएन तकनीक की उपलब्धियों में से एक का दर्शन महाराष्ट्र के सांगली जिले के सालगारा ग्राम के एक किसान के खेत में हुआ। इस किसान पे* पास १० एकड़ की भूमि का स्वामित्व है और वह उस पर विशाल मात्रा में बैंगन का उत्पादन करता है। उसने अपने खेतों को सफेद सूंडियों से मुक्त करने का हर संभव तरीका अपना कर देख लिया, और उसका सारा प्रयास व्यर्थ रहा।